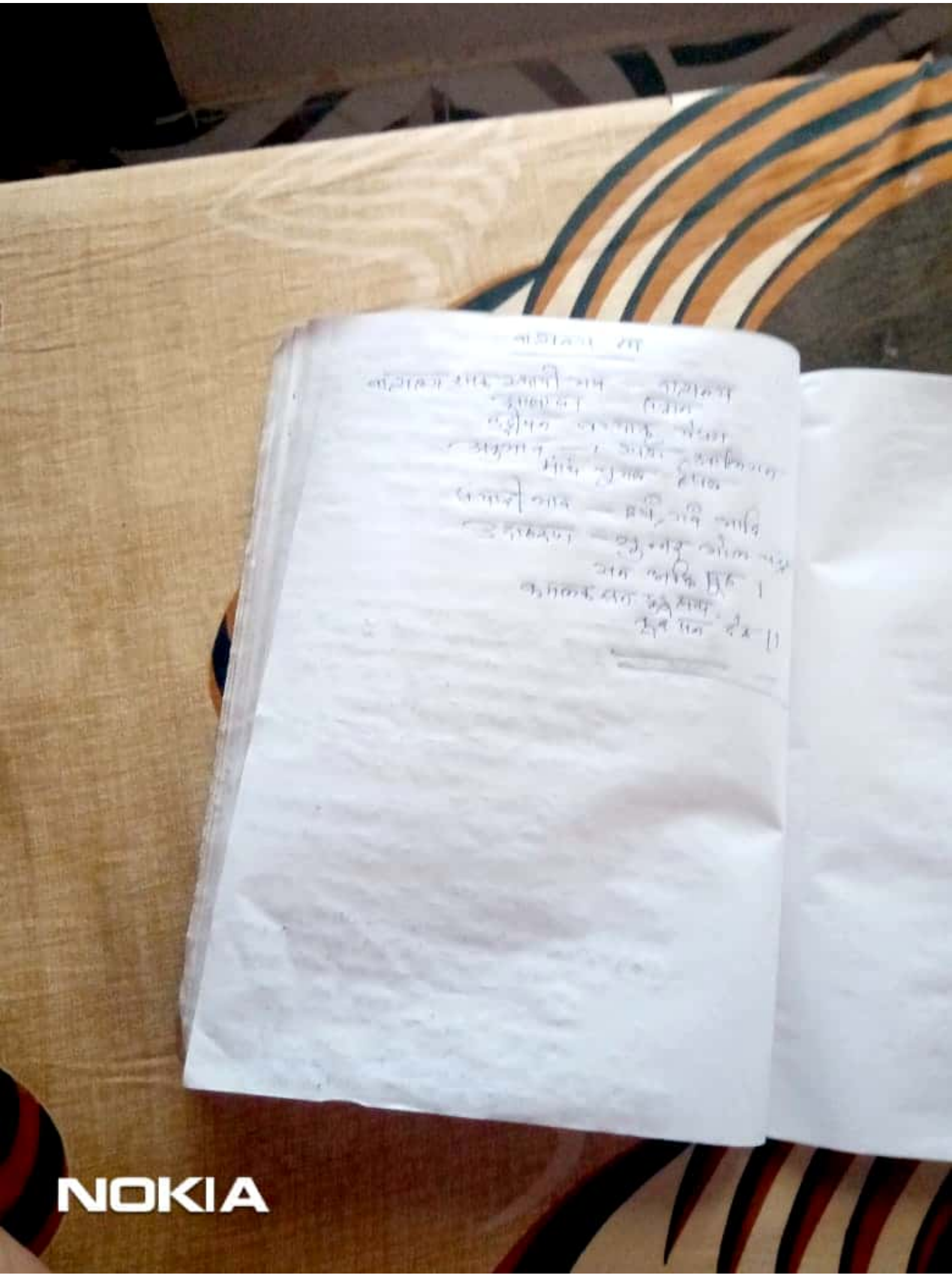

Scanned with CamScanner

उद्दीपन — रक्त [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अनुभाव — मूर्छा, [illegible] [illegible] [illegible]

संचारी भाव — अपस्मार, आवेग, व्याधि [illegible] आदि

उदाहरण — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]।

शान्त रस

शान्त रस — निर्वेद

आलम्बन — संसारक अनित्यताक ज्ञान, परमात्म चिन्तन।

उद्दीपन — [illegible] [illegible] आ [illegible]

अनुभाव — रोमाञ्च आदि

संचारी भाव, हर्ष, स्मृति, धृति आदि

उदाहरण — किछु करतु न जाइ [illegible] [illegible] [illegible]॥
स्तुति [illegible] [illegible] [illegible]

हास्य रस

स्थायी भाव — हास्य

आश्रय — श्रोता, पाठक, दर्शक

आलम्बन — विकृत विचित्र वेशभूषा

उद्दीपन — वाणी [illegible] विचित्र वेश

अनुभाव — दाँत [illegible]

संचारी भाव — चपलता, हर्ष, उत्सुकता, आलस्य

उदाहरण — रावण [illegible] [illegible] [illegible]
अंगद देखितहिं [illegible] [illegible]

रौद्र रस

रौद्र रस — [illegible] [illegible] क्रोध आदि

आलम्बन — विरोधी [illegible] आदि

उद्दीपन — विपक्षी [illegible] [illegible] [illegible]

अनुभाव — [illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

संचारी भाव — आवेग, [illegible], [illegible] आदि

उदाहरण — [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]॥

भयानक रस

भयानक रसक स्थायी भाव भय

आलम्बन — [illegible] देखब [illegible]
वन — [illegible] देखब

उद्दीपन — भयानक वस्तुक चेष्टा

अनुभाव — कम्पन, रोमाञ्च

संचारी भाव — चिन्ता, [illegible], मरण

उदाहरण —
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अद्भुत रस

अद्भुत रसक स्थायी भाव — विस्मय

आलम्बन — अद्भुत अलौकिक [illegible]

उद्दीपन — आश्चर्यजनक वस्तुक विचित्रता

अनुभाव — रोमाञ्च, कम्प आदि

संचारी भाव — [illegible] [illegible] [illegible]

उदाहरण — [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

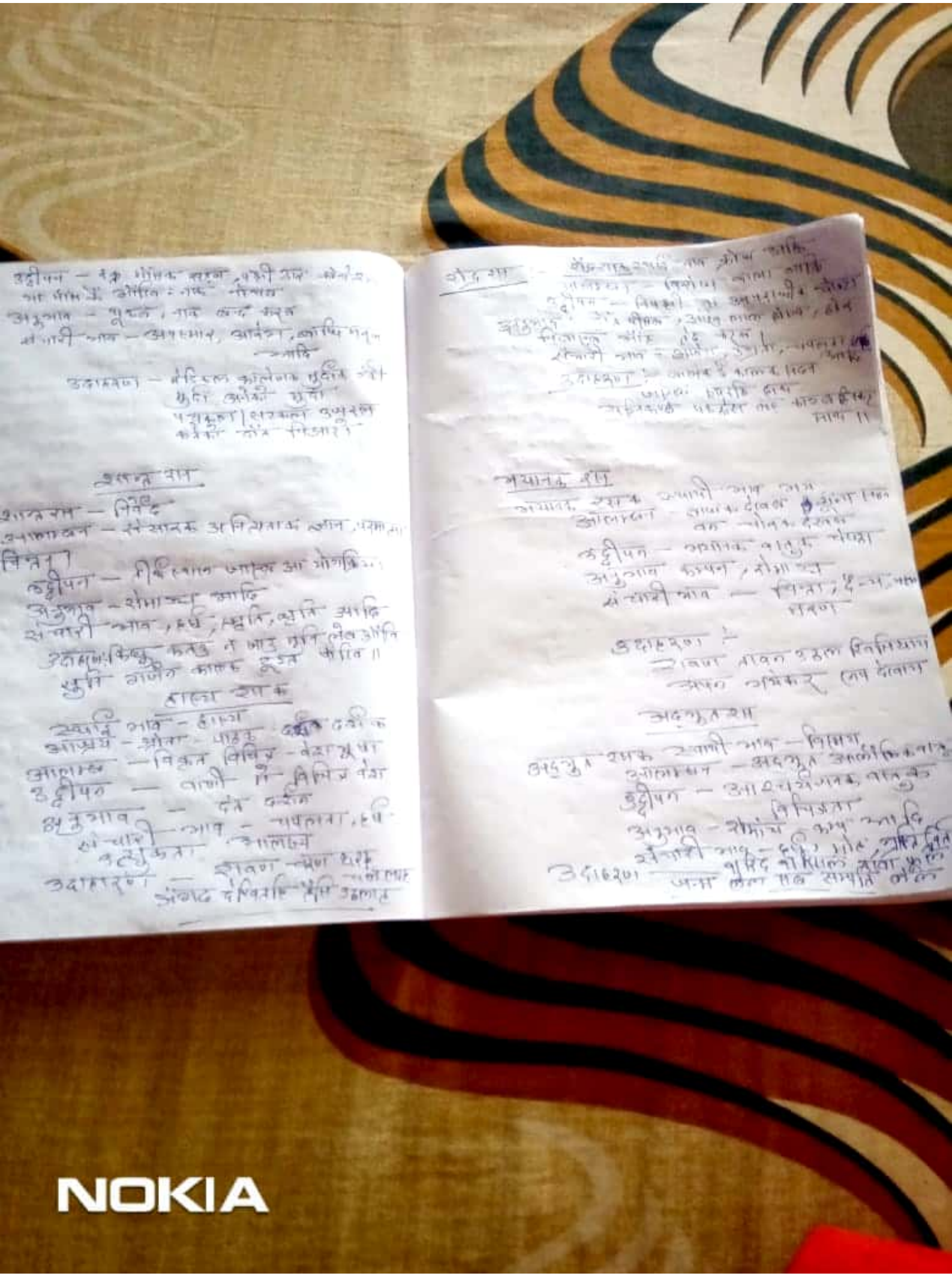

रसक [illegible] उल्लेख [illegible]

काव्यक [illegible] [illegible] आदि [illegible] [illegible] आदि [illegible] [illegible]

मुद्र भरतमुनि – रसक [illegible] [illegible] [illegible] अछि । [illegible]

रसक भेद

रस	स्थायी भाव
श्रृंगार	रति
करुण	शोक
वीर	उत्साह
वीभत्स	जुगुप्सा
शान्त	निर्वेद
हास्य	हास
रौद्र	क्रोध
भयानक	भय
अद्भुत	विस्मय
वात्सल्य	वात्सल्य

[illegible]
अछि । [illegible]
अनुभाव – [illegible]

उदाहरण – [illegible]

करुण रस – [illegible]
[illegible] आलम्बन [illegible]
अछि उद्दीपन [illegible]
संचारीभाव – [illegible]
[illegible] आदि [illegible] ।

[illegible]

[illegible]

वीररस – स्थायी भाव उत्साह [illegible]
आलम्बन – शत्रु [illegible]
उद्दीपन – [illegible]
अनुभाव – [illegible]
संचारीभाव – [illegible] आदि
उदाहरण – [illegible]

[illegible]

वीभत्स रस

स्थायी भाव जुगुप्सा [illegible]
आलम्बन – [illegible] आदि ।

Q – डा० ललित गजानु वजित वसात शीर्षक पद्य प्रकाश किए?

Ans: — 'वसात' शीर्षक डा० भीमनाथ झा द्वारा लिखित पद्यक अत्यन्त सूक्ष्म आ मार्मिक विवेचन कएने छथि। वसात शब्द सँ ओ श्लेष जकाँ विभिन्न विचार प्रकट कएलनि अछि।

वसात तकरा कहल जाइत जे सदिखन बहय, निरन्तर जे एकरस मे बहैत अछि। वसात आ समय मे बड़ समता अछि, समय वसात जकाँ निरन्तर चलैत रहैत अछि। वसात कोनहुँ किछु कालक हेतु रुकि सकैत अछि मुदा समयक काल करबनहुँ कतहुँ नहि रुकैत अछि। समयक दोसर नाम काल सेहो थिक जे अविरल गति सँ काज मे संलग्न रहैत अछि।

मनुष्य लेल वायु प्राणधार थिक। प्रकृतिक महान उदारताक प्रसाद स्वरूप प्राणवायु लोककेँ सदिखन भेटैत अछि। वस्तुतः स्वच्छ वायु शरीर मे प्रवेश कए मानव शरीरकेँ प्राणवन्त बनौने रहैछ वायु हमर शरीरकेँ स्पर्श करैत स्फूर्ति भरैत रहैत अछि।

ते हमरा शरीर लेल प्राणवायु अनिवार्य तत्व थिकैक। कतहुँ रहल कोनो परिस्थिति मे रहल साँस चलितहि रहैत। ताहि प्राणवायुक रुकि गेला पर जीवनक अन्त भऽ जाइत अछि।

ताहि तरहेँ मनुष्यक वाणी अछि भाषाक आ भाषाक प्राणवायु होइछ ओकर साहित्य। मैथिली भाषा जे आइ जीवित अछि तेकर मूल श्रेय छैक एकर प्राणवायुकेँ। मिथिला मे साहित्यक प्राणवायु अमृतधारा सँ मैथिली कहियो नहि मुइल ई विशाल साहित्य एकरा कहियो निष्प्राण नहि होमए दैत। मैथिलीक समृद्ध मिथिला मे संजीवनी स्वरूप काज करैत अछि।

समयक संग वसातकेँ सदिखन पाबि लोकनि सबके हमरा लोकनि जीवनक सार्थकता सिद्ध होइत।